ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ व्रत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

ब्रह्मचर्य एक महान व्रत है। पंच महाव्रतों में ब्रह्मचर्य को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। पंचव्रत हैं– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। ब्रहम का अर्थ होता है आत्मा और चर्य का अर्थ होता है विचरण करना। इसलिए ब्रह्चर्य का अर्थ हुआ आत्मा में रमण करना। महाव्रतों से सम्बन्धित ब्रह्मचर्य महाव्रत का विशेष महत्त्व है। ब्रह्मचर्य का अर्थ है–आत्मविद्या या आत्मविद्याश्रित आचरण। ब्रह्मचर्य' शब्द दो शब्दों के योग से बना है–'ब्रह्म' और 'चर्य'। 'ब्रह्म' शब्द के मुख्यतः तीन अर्थ हैं–ब्रह्म=वीर्य, ब्रह्म=आत्मा, ब्रह्म=विद्या। 'चर्य' शब्द के भी तीन अर्थ हैं–'रक्षण, रमण तथा अध्ययन।' इस तरह ब्रह्मचर्य के तीन अर्थ है–वीर्य रक्षण, आत्म–रमण और विद्याध्ययन। केवल वीर्यरक्षा या जननेन्द्रिय विषयक संयम ब्रह्मचर्य का अधूरा अर्थ है। ब्रह्मचर्य का विधेयात्मक रूप तो अपनी आत्मा या परमात्मा की उपासना में लगना है। वीर्यरक्षा करना, योग साधना करना, विद्याध्ययन करना, किसी विशाल ध्येय को सामने रखकर या निश्चित करके तदनुसार आचरण करना–ये सब आत्मोपासना के लिए सहायक ब्रह्मचर्य के विधायक रूप हैं। उपस्थेन्द्रिय विषयक संयम को ब्रह्चर्य कहा जाता है। ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने वाला इन्द्रियों पर नियंत्रण करता है। मानव पंचेन्द्रिय प्राणी है। हर इन्द्रियों के अपने–अपने विषय हैं विषय इन्द्रियों को आकर्षित करते हैं। इससे आसक्ति बढ़ती है। इन्द्रियां पराङ्मुखी होती है। उनका स्वभाव बाह्य विषयों की और दौड़ना है। गृहस्थ स्वदार संतोष करता है। संन्यासी पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता है। संत अपनी इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण करता है। संत शान्त प्रकृति का होता है। इसीलिए वह संत कहलाता है। भगवान महावीर ने दो धर्मों की देशना की है। आगार धर्म और अनगार धर्म। आगार धर्म गृहस्थों के लिए है। गृहस्थ शादी–विवाह कर सकता है। वह संसार में जीवन यापन करता है। समाज की जिम्मेदारी उस पर होती है। संन्यासी सब कुछ त्यागकर संन्यास के मार्ग को स्वीकार करता है। वह सबका कल्याण करने वाला होता है। वह पूर्ण ब्रह्मचारी होता है।

गृहस्थ अणुव्रती होता है और संन्यासी महाव्रती। स्वदार संतोष करना गृहस्थ के लिए आवश्यक है। शरीर के साथ काम भावना जुड़ी रहती है। इसे नियंत्रित करने के लिए विवाह संस्कार की व्यवस्था की गयी है। पाश्चात्य और प्राच्य संस्कृति में मूलभूत अन्तर हैं। पाश्चात्य संस्कृति खाओ पीओ और मस्त रहो, में विश्वास करती है। किन्तु भारतीय संस्कृति में चरित्र को बहुत महत्व दिया गया है। ब्रह्मचर्य का सम्बन्ध चरित्र से है। चरित्रवान व्यक्ति दृढ़तापूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करता है। यह व्रत बहुत कठिन है किन्तु जो इसका पालन करता है। वह संयमी कहलाता है। आजकल प्रायः समाचार पत्रों में बलात्कार की घटनाएं प्रमुखता से दिखलाई जाती है। ये घटनाएं क्यों बढ़ रही हैं? यह इसलिए बढ़ रही है कि लोगों में उच्छृंखलता की भावना बढ़ रही है। लोग ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर रहे हैं। हमारे देश में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। दूसरी स्त्रियों में मातृ बुद्धि रखने का उपदेश दिया गया है किन्तु आजकल लोग ऐसी भावना नहीं रख रहे हैं। इसलिए बलात्कार जैसी घटनाएं बढ़ रही है।

भारतीय संस्कृति व्रतों की संस्कृति है। यहां के निवासी प्रायः हर महीने कोई न कोई व्रत रखकर आत्मा को शुद्ध करते है। व्रत का मतलब होता है संकल्प। महाव्रत का तात्पर्य है ऐसा व्रत जिसमें किसी प्रकार का अपवाद न हो। निरापद रूप से जिस व्रत का आचरण किया जाता है वहीं महाव्रत कहलाता है। जैन धर्म का मूलाधार अहिंसा है। हिंसा कभी भी धर्म नहीं हो सकती। इस विराट् विश्व में जितने भी प्राणी हैं, वे चाहे छोटे हों या बड़े हों, पशु हों या मानव हों, सभी जीवित रहना चाहते हैं, कोई भी मरना नहीं चाहता। अहिंसा में सभी प्राणियों के कल्याण की भावना निहित है। प्रश्न व्याकरण में कहा गया त्रस, स्थावर सभी भूतनिकायों का मंगल करने वाली अहिंसा है। मनुष्य हिंसा क्यों करता है? हिंसा का कारण क्या है? इस प्रश्न का उत्तर आचाराङ्ग में दिया गया है। हिंसा का प्रमुख कारण मानव का अज्ञान है। तत्त्व से अनभिज्ञ होने के कारण मनुष्य विषय, कषाय आदि मानसिक दोषों से पीड़ित है। इसलिए वह हिंसात्मक प्रवृत्ति करता है। भगवान् महावीर ने छह जीवनिकायों की प्ररूपणा की है। इनमें पृथ्वी, अप, तेजस्, वायु, वनस्पति और त्रस की प्ररूपणा की गयी है। जब तक जीव का ज्ञान नहीं होता, तब तक हिंसा से छुटकारा नहीं मिल सकता। द्वितीय महाव्रत के रूप में सत्य की

गणना की गयी है। जैसा हुआ है, वैसा ही कहना सत्य का सामान्य लक्षण है, परन्तु अध्यात्म मार्ग में स्व पर अहिंसा की प्रधानता होने से हित व मित वचन को सत्य कहा जाता है। 'सत्य' पद अनेकार्थी है–सत्, सद्भाव, तत्त्व, तथ्य, सार्वभौमनियम, भूतोद्भावन संयम, काय, भाव और भाषा की ऋजुता तथा अविसंवादन योग, यथार्थवचन, अगर्हितवचन, व्यवहाराश्रित वचन और प्रतिज्ञा ये सत्य के अर्थ हैं। सामान्यतया स्तेय से तात्पर्य है चोरी और अस्तेय का तात्पर्य है चोरी न करना। स्तेय और अस्तेय के अनेक रूप बताए गए हैं। भारतीय संस्कृति में पांचों महाव्रतों का विशिष्ट स्थान रहा है। यह संस्कृति का प्राण है।